बीती विभावरी जाग री कविता का सौंदर्य-बोध

कवि – जयशंकर प्रसाद

प्रस्तुतकर्ता – पुष्पा महाराज

परिचय

- जयशंकर प्रसाद छायावाद युग के प्रमुख कवि हैं। उनकी कविता 'बीती विभावरी जाग री' प्रकृति, जीवन और आत्मा के नवजागरण की अभिव्यक्ति है। इस कविता में अंधकार से प्रकाश की यात्रा के माध्यम से जीवन के सौंदर्य और चेतना का बोध कराया गया है।

कविता का भावार्थ

- कवि कहता है कि अब रात्रि बीत चुकी है और प्रभात की उजली किरणें धरती को प्रकाशित कर रही हैं। प्रकृति और जीवन में नवचेतना का संचार हो रहा है। यह केवल भोर का नहीं, बल्कि आत्मिक जागरण का प्रतीक है।

प्रकृति-सौंदर्य

- कविता में भोर का दृश्य अत्यंत कोमल और भावनात्मक रूप में चित्रित है। पक्षियों की चहचहाहट, फूलों की मुस्कान और वन की हरियाली जीवन के उल्लास का प्रतीक बनते हैं।

जीवन-सौंदर्य

- ‘बीती विभावरी जाग री’ में जीवन का सौंदर्य निराशा से आशा की ओर बढ़ने में निहित है। अंधकार के बाद आने वाला प्रकाश जीवन में नवीनीकरण और सृजन की प्रेरणा देता है।

आध्यात्मिक सौंदर्य

- कविता का जागरण केवल बाह्य नहीं, बल्कि आत्मिक है। कवि आत्मा से संवाद करते हुए उसे चेतना और सृजन की ओर प्रेरित करता है। यह आत्मज्ञान और मुक्ति का प्रतीक है।

प्रतीकात्मक सौंदर्य

- कविता में विभावरी (रात्रि) अंधकार और अज्ञान का, जबकि प्रभात ज्ञान और चेतना का प्रतीक है। पक्षी और पुष्प सृजन और जीवन की गति के प्रतीक हैं।

संगीतात्मक सौंदर्य

- कविता में ध्वनि, लय और पुनरावृत्ति का अद्भुत संयोजन है। 'बीती विभावरी जाग री' की पुनरावृत्ति कविता को संगीतात्मक बनाती है और उसमें गति का प्रवाह उत्पन्न करती है।

भाषा और शैली का सौंदर्य

- कविता की भाषा ललित, संस्कृतनिष्ठ और मधुर है। शब्द चयन में गेयता और चित्रात्मकता का सुंदर मेल है, जो कविता को प्रभावशाली बनाता है।

दर्शन और सौंदर्य का समन्वय

- कविता में सौंदर्य और दर्शन का अद्भुत संगम है। अंधकार और प्रकाश के प्रतीकों के माध्यम से जीवन की गति, परिवर्तन और जागरण को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सौंदर्य-बोध का सारांश

- • प्रकृति-सौंदर्य – प्रभात का मनोहर चित्रण
- • जीवन-सौंदर्य – आशा और नवीनीकरण की भावना
- • आध्यात्मिक सौंदर्य – आत्मा का जागरण
- • प्रतीकात्मक सौंदर्य – रात्रि और प्रभात के प्रतीक
- • भाषा-सौंदर्य – कोमल, मधुर और गेय शैली

निष्कर्ष

- ‘बीती विभावरी जाग री’ कविता केवल प्रभात का वर्णन नहीं, बल्कि जीवन, चेतना और आशा की प्रतीक है। प्रसाद का सौंदर्य-बोध आत्मिक जागरण और सृजन की दिशा में प्रेरित करता है।